मूल्यांकन के उद्देश्य

(Objectives of Evaluations)

मूल्यांकन प्रक्रिया के उद्देश्य निम्न लिखित है —

सामान्य उद्देश्य — विशिष्ट उद्देश्य

(1) सामान्य उद्देश्य

अर्थ: शिक्षा एक उद्देश्यपूर्ण प्रक्रिया है। किसी भी शैक्षिक संस्था मे विभिन्न विषयों की शिक्षा प्रदान की जाती है तथा सब का अपना-2 उद्देश्य होता है।

शिक्षा के सामान्य उद्देश्यों के निर्धारण मे निम्न बातो पर ध्यान देना आवश्यक होता है।

(1) छात्रों के शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवं भावात्मक पर ध्यान।

(2) समाज का आर्थिक, राजनीतिक, सांस्कृतिक एवं धार्मिक आधार तैयार कराना

(3) छात्रों की क्षमता एवं शिक्षा का स्तर।

(2) विशिष्ट उद्देश्य

दैनिक शिक्षण कार्य करते समय अध्यापक के मस्तिष्क मे सदैव कुछ तात्कालिक प्राप्य उद्देश्य होते है। जिनकी प्राप्ति कक्षा शिक्षण के दौरान सम्भव है सभी उद्देश्य संक्षिप्त, प्रत्यक्ष, कार्यपरक होते है। ये व्यवहारिकता पर आधारित होते है इस अल्प अवधि मे इनको प्राप्त किया जा सकता है।

(3) शिक्षण बिन्दु

पाठ्यवस्तु के किसी भी प्रकरण को शिक्षक की सुविधा अनुसार छोटे-छोटे भागो मे बाटा जाता है जिसे शिक्षण बिन्दु कहते है। इनके द्वारा विशिष्ट उद्देश्यों की प्राप्ति होती जाती है।

(4) अधिगम क्रियाए

छात्रों के व्यवहार मे परिवर्तन अधिगम परिस्थितियों के द्वारा लाया जाता है अधिगम परिस्थिति + शिक्षण उद्देश्य के मिलन से छात्रों के

(5) व्यवहार परिवर्तन

व्यवहार परिवर्तन मापन के बाद कुछ परीक्षणों के बाद व्यवहार परिवर्तनों को ज्ञात किया जाता है। जैसे - कोई परीक्षण, व्यक्तित्व परीक्षण, निदानात्मक परीक्षण आदि आदि द्वारा ज्ञात करते हैं।

(6) मूल्यांकन

अंत में छात्रों के व्यवहार में आये परिवर्तन को पूर्व परिवर्तन होने के बाद तुलना करके उसका मूल्यांकन करते हैं। जिसे मूल्यांकन कहते हैं।

(7) प्रतिपुष्टि (Feedback)

मूल्यांकन प्रक्रिया का अंतिम पद परिणामों का प्रतिपुष्टि के रूप में प्रयोग करता है। यदि वांछनीय उद्देश्य प्राप्त न हो तो उसके शिक्षण विधि में सुधार किया जाता है।

(8) निष्कर्ष

इस प्रकार स्पष्ट है कि मूल्यांकन एक सतत प्रक्रिया है जिसमें मापन पहले तथा मूल्यांकन बाद में होता है।

Scanned with CamScanner

(मूल्यांकन की आवश्यकता एवं महत्व
Importance or Need)

1. क्रमबद्ध प्रक्रिया (Systematic Process)
2. कौशलो मे निपुणता का मापन (शिक्षक
3. ज्ञान की वृद्धि मे सहायक
4. वैयक्तिक शिक्षा मे सहायक
5. वर्गीकरण [illegible] मे सहायक
6. मार्गदर्शन मे सहायक।
7. उपलब्धी एवं असफलताओ का बोध
8. शिक्षण विधियो की उपयोगिता एवं सीमाओ का बोध। —
9. उपचारात्मक शिक्षा व्यवस्था
10. शिक्षक को अपने निर्णयो का बोध
11. निष्कर्ष। —

① क्रमबद्ध प्रक्रिया

व्यवहार परिवर्तन

[illegible] व्यवहार

~~Type of~~ Kind of Evalution

मूल्यांकन के प्रकार

1961 मिचेल स्क्रीवन (Michael Scriven)

1. संरचनात्मक मूल्यांकन — Formative Evalution
2. योगात्मक मूल्यांकन — Summative Evalution
3. सतत मूल्यांकन — Continuous Evalution
4. व्यापक मूल्यांकन — Comprehensive Evalution

1 संरचनात्मक मूल्यांकन

अर्थ! संरचनात्मक मूल्यांकन वह है जब कोई शैक्षिक योजना अपनी प्रारंभिक या निर्माणावस्था में हो और उसका मूल्यांकन कर उसमें सुधार किया जाता है उसे संरचनात्मक मूल्यांकन कहते हैं। किसी भी शैक्षिक योजना का मूल्यांकन जब उसकी प्रभावशीलता, गुणवत्ता तथा उपयोगिता को बढ़ाने के लिए किया जाता है वह संरचनात्मक मूल्यांकन कहलाता है जैसे — यदि किसी शोध योजना के प्रथम प्रारूप का मूल्यांकन इस उद्देश्य से किया है कि उसे प्रस्तुत करने और उस पर क्रियान्वयन करने से पूर्व उसमें सुधार कर अधिक प्रभावशाली बनाया जाता है।

① संरचनात्मक मूल्यांकन

अर्थ! संरचनात्मक मूल्यांकन वह है जब कोई शैक्षिक योजना अपनी प्रारंभिक या निर्माणावस्था में हो और उसका मूल्यांकन करके उसमें सुधार किया जाता है उसे संरचनात्मक मूल्यांकन कहते हैं। किसी भी शैक्षिक योजना का मूल्यांकन जब उसकी प्रभावशीलता गुणवत्ता तथा उपयोगिता को बढ़ाने के लिए किया जाता है वह संरचनात्मक मूल्यांकन कहलाता है। जैसे — यदि किसी शोध योजना के प्रथम प्रारूप का मूल्यांकन इस उद्देश्य से किया है कि उसे प्रस्तुत करके और उस पर क्रियान्वयन करने से पूर्व उसमें सुधार कर अधिक प्रभावशाली बनाया जाता है।

③ योगात्मक मूल्यांकन

(Summative Evaluation)

अर्थ! योगात्मक मूल्यांकन! किसी शैक्षिक कार्यक्रम को अन्तिम रूप देने एवं उसे जारी रखने के पश्चात उसकी सामग्री की वाहनीयता ज्ञात करने के लिए किया जाता है जैसे — एक अध्यापक को अपने छात्रों को किसी विषय के लिए कोई एक पुस्तक बतानी है और वह उस विषय पर उपलब्ध अनेक पुस्तकों में से मूल्यांकन कर कोई एक पुस्तक उन्हें बताता है तो वह शिक्षक का यह मूल्यांकन योगात्मक मू० कहलाता है।

Scanned with CamScanner

उसे सुधारा जाता है। अतः इससे स्पष्ट है कि बालक क्या जानता (ii) बालक क्या नहीं जानता है ?

(iii) बालक अधिगम परिस्थिति में कठिनाइयाँ महसूस करे।

अतः सतत मू० विद्यार्थियों में सुधारात्मक प्रक्रिया और शैक्षिक सुधार के माध्यम से प्रतिपुष्टि प्रदान करता है।

(B) व्यापक मूल्यांकन

अर्थ = "व्यापक मू० शैक्षिक और सहशैक्षिक (सहगामी क्रियाएँ) दोनों क्षेत्रों से विद्यार्थियों के विकास को इंगित करता है। शैक्षिक क्षेत्र में विषय से सम्बन्धित छात्र की समझ और दक्षता की जानकारी दी जाती है। सहशैक्षिक क्षेत्र में छात्र से सम्बन्धित मनोवृत्ति, रुचि, व्यवहार, कुशलता एवं सामाजिक विशेषता और प्रसार, रुचियाँ, मनोवृत्तियाँ तथा मूल्य शामिल हैं।